2005 1 32



."

:

677

1914 1333

u U

> .² 1923 1341

.

. .

| | | | | 2005 | 1 32 | | | |
|--------|----|-------------|----------|------|---------|------|------|----|
| | | 4 | - | 192 | " 24 | 1342 | n | |
| | | | .5 | | 193 | | | |
| | | | .6 | | II | " | | |
| | IJ | 5 | .7 | 1930 | 1928 | | | |
| | .6 | | | | | | | |
| " 7 | | n | .8 | н | u | | 1929 | |
| | | | | | | | | |
| : | | | | | | п | | H |
| | | : | u | | | | | |
| | | | | | | II | u | |
| | | | | | " | | 1351 | |
| | | () | | | 11 | п | | |
| | | | | | | .3 | | |
| . " | | ıı 11 91 | | | | | | · |
| n | ." | | .1 | | | | : | |
| | | | .2 .3 | | H | | н | .1 |
| | | | .4 | | | 11 | п | .2 |
| | | | .5 | | I | | " | |
| | • | | | | | ı | " | .4 |
| : | | | · | | | | | - |
| | | | | | | | | |

> 1931 : .

1932

....

п

.....

:

. .¹⁰" . () 1932

· · · · ·

.12 . : . :

1951 1947 : . :

> 1951 : .¹¹

> > :

1929

:

| | | | 2005 1 | 32 |
|----|--------------|---------|--------|------------------|
| : | (|) | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | 14. | | | : |
| : | 14m | | | |
| : | | | | |
| | | : -1 | | 1956 |
| | | | | |
| | ": | | : | 1956 : |
| | 15¤ | | | |
| | | -2 | | 1956 : 1947 : |
| | ". | | 13 | |
| | | | | |
| | : " . 16" | | | |
| | · | -3 | | |
| ": | | | | |



-9 .²⁴" -15

> . -10

| | | 2005 1 32 | |
|------------------|------|-----------|------|
| 27 | | | |
| : | -18 | | |
| | | | |
| | | | |
| ": | | | -16 |
| | | | |
| | | | |
| | | | ": |
| 28. | | | |
| .28¤ | -19 | | |
| | - | | |
| | | | .25¤ |
| .29 | | | -17 |
| ": | | | |
| - | | | |
| | | | |
| .30 ⁿ | | | |
| | | ": | |
| : | | | |
| | : | | |
| | .1 | 261 | |
| | | | : |
| | u | | |
| • | .2 . | | · · |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

.5

•



- 8 -

| | | | 2005 1 | 32 | | | |
|-------------|-------|----|--------|----|---|-----------|-----------------------|
| | | | .4 | 2" | | | |
| | | | | : | | | -3 |
| | | | | | | | |
| | | | | | | | |
| | | | | | | | |
| | | | | ": | | | |
| | .47¤ | | | | | | |
| : | | | | | | | |
| | | | | | | | |
|) | | | | | | | |
| / | (| | | | | | |
| | | ": | .43¤ | | | | |
| 48 . | | | | : | | | -4 |
| • | : | | | | | | |
| | | | | | | | |
| | | | : | | | | . ⁴⁴ -5 |
| | | | • | | | | -5 |
| | | | | | : | | -6 |
| | | | | | | | |
| | | | | (|) | | |
| | | | | | | | |
| | | | • | | : | | |
| | | | | | · | | |
| | | | | | | 45 | |
| | | | | | | .45 ". | |
| | • ••• | | | - | - | | _ |
| | | | | | | | |
| | | ": | | | | | |
| | | | | | | .4 | Śii |
| | | | | | | | |

- 9 -

.50"

| | | | | | : | | • |
|---|-----|-------|---|---|---|---|--------|
| H | н н | н | | | | : | - |
| | | | | | | | -1 |
| | | | | | | | -2 |
| | | | | | | - | -3 |
| | | | | | | | -4 |
| | | | : | | | : | - |
| | | | | н | | | -1 |
| | | | | | | | -2 |
| | | | | | | | |

-3 . -4





- 25





"plan"



.

27

.

.

.







. 1951 /23 /

.1

.2 .3 .4

.5

.6

.7

.

.61¤

.

. . : :

: : п .62

1956

.60

ш



- 13 -



ıı

:

.71 .

ш

":

:

.

:











....

n

u

II

п





":



- 17 -

... п п



ш

:

: .83¤ .82"

: : !!! п

1987

...

_

: ." :

:

1983 п : .84 :

1985 / /11

: : п .1

.

| | | | 2005 1 32 |
|------|----------------------|--------------------------------------|--|
| | | 3 | .2 .3 |
| | | .4 | |
| | | .5 | .5 |
| | | .6 | : .2 |
| .267 | 276 | (16) 1977 (17) (18) | .5 1 8 (1) |
| .32 | .276 .3 3 .106 | (18) (19) (20) (21) (22) | . 30 (3) .211 (4) . (5) () (6) |
| | .80 | (23) .18 (24) (25) .20 | .139 (8) (9) . 51 |
| | .50 | (26) (27) (28) (29) | .72-68 (12) (13) |
| | | .172 (30) | 7 (15) |

| .1893 | (51) | | | | | | | | | (31) |
|--------------|------|------|------|------|-----|------|-------|----|------|------|
| .63 2 | (52) | | | | | | | | .22 | |
| | (53) | | | | | | | | | (32) |
| . 48 2 | (54) | | | | | | | | 205 | |
| .42 2 | (55) | | | | | .125 | 5 | | | (33) |
| .44-43 2 | (56) | | | | | .108 | | | | (34) |
| .44-43 2 | (57) | | | | | | | | | |
| .45 2 | (58) | | | | | | | | .88 | |
| .31 2 | (59) | | | | | | | | | |
| .228-227 | (60) | | | | | | | .2 | 14 | |
| .243-242 | (61) | | | | .68 | | | | | (35) |
| .230-229 | (62) | | | | | | | | | (36) |
| .229 | (63) | | | | | | | | .398 | |
| | (64) | .31 | | 1496 | | | | | | (37) |
| .231 | (65) | | | .19 | | | | | | (38) |
| .232 | (66) | | 7 | | | | | | | (39) |
| .234 | (67) | | | | | | | | .1 | |
| .25 | (68) | 29 | (|) | | | | | | (40) |
| .19-18 | (69) | | | | | | | | | |
| | (70) | | | | | | | | | |
| .223 222 217 | (71) | | | | | | | | | (41) |
| .224 | (72) | .143 | 2 | | | | | | | (42) |
| .226-225 | (73) | -15 | | | | | | | | (43) |
| .261 2 | (74) | | | | | | | | 30 | |
| .355-354 | (75) | | | | | | | | | (44) |
| .116 | (76) | | | | | | | | | |
| | (77) | .3 | | | | | | | | (45) |
| .250-249 | | | | | | | | | | (46) |
| .186-185 2 | (78) | | | | | | | .2 | 10 | |
| .271 | (79) | | .138 | 1 | | | | | | (47) |
| .243-240 | (80) | | | | | | | | | (48) |
| .133 2 | (81) | | | | | | | | | (49) |
| .382 1 | (82) | | | | | .3 | | | 211 | |
| .237-236 | (83) | | | | | .] | 13-12 | 2 | | |
| . 201 2 | (84) | | | .9 | 1 | | | | | (50) |

...

- 20 -

.

.

:

.

•

.

.

| | 2005 1 32 | |
|------|-----------|------|
| 1998 | | 1979 |
| 1977 | | 1972 |

Life and Thought of the Islamic Scholar and Reformist: Abu Al-Hassan Al-Nadawi

.

Mohammad Amin H.M. Bani Amer*

ABSTRACT

This is a study of the life and thought of one of those described by the Prophet Mohammad "There will be a group of my nation who would be defending the right path, never abandoning it".

He is Abu Al-Hasan Al-Nadawi, a well-known Muslim scholar in the Indian subcontinent and the Muslim world, and a famous Muslim reformist who carried out the mission of Islam to different areas of the world. His works include fruitful discussions of the different aspects of Islam.

He studied the western civilization and objectively criticized it. He followed the way of the Prophet and his Companions in selecting the right time of preaching Islam, observed the priorities, and spent his money to call to Islam. He also used every possible means to preach effectively Islam following the Quranic verse (This is my way I, and those who follow me, call for Allah with a clear vision of the truth) and the Quranic verse (call people to your Lord's path with wise and tactful preaching, and argue with them in the better way of speech).

^{*} Faculty of Sharia'h, Yarmouk University, Irbid, Jordan. Received on 25/8/2003 and Accepted for Publication on 26/2/2004.

• • •